Research Paper Geography

गणिनी आर्यिका स्याद्वादमती माताजी की रचनाओं मे तत्वार्थसूत्र टीका एक विश्लेषण

Ganini Aaryika Syadwadamati Mataji ki Rachanao Me Tatwarthsutra Tika ak Vishleshan

PROF. DR. B.L SETH DIRECTOR TRILOK INSTITUTE OF HIGHER STUDIES AND RESEARCH HOTEL OM TOWER, CHURCH ROAD, M. I. ROAD JAIPUR-302001

SHIKHA SHEKHAWAT RESERCH SCOLAR, JJT UNIVERSITY JHUNJHUNU

KEYWORDS

आचार्य उमास्वामी द्वारा रचित 'तत्वार्थ सूत्र' है। इस ग्रन्थ की पॉच टीकाए उपलब्ध हैं। 1 आचार्य पूज्यपाद क 'सर्वार्थ सिद्धि' 2 आचार्य अकलंक देव तत्वार्थ राजवा. र्तिक' 3 आचार्य विद्यानन्दि 'तत्वार्थ – भलोकवार्तिकालंकार 4 आचार्य श्रुतसागर सूरिः तत्वार्थवृत्ति 5 गणिनी आर्यिका स्वादादमती माता जी विमलाप्रश्नोत्तरी

आचार्य उमास्वामी का एक और नाम 'गृद्धपिच्छ' भी मिलता है।1

तत्वार्थसूत्रकर्तारं गृद्धपिच्छोपलक्षितम।

वन्दे गणिन्द्रंसंजातमुमास्वामिमुनिश्वरम।।

आचार्य उमास्वामी आचार्यो की किस परम्परा मे है। इसका उल्लेख है। श्रवणबेलगोला के अभिलेखों मे निम्न परम्परानुसार प्रमाणित होती है।2

1 भद्रबाहु द्वितीय 2 गुप्तिगुप्त 3
माघनन्दि

4 जिनचन्द्र 5 कुन्दकुन्दाचार्य 6
उमास्वामी

7 लोहाचार्य 8 यशकीर्ति 9
यशोनन्दि

10 देवनन्दि 11 जयनन्दि 12
गुणनन्दि

13 वज्रनन्दि 14 कुमारनन्दि 15
लोकचन्द

16 प्रभाचन्द 17 नेमिचन्द 18
भानुनन्दि

19 सिंहनन्दि 20 वसुनन्दि 21
वीरनन्दि

22 रत्ननन्दि 23 माणिक्यनन्दि 24
मेघचन्द्र

25 भाान्तिकीर्ति 26 मेरूकीर्ति

उपर्युक्त पट्टावली से उमास्वामी के गुरू कुन्दकुन्दाचार्य प्रमाणित होते है। तत्वार्थ सूत्र की रचना मे कुन्दकुन्द के ग्रन्थों का संदर्भ के रूप में प्रयोग हुआ है।

डॉ0 पिटर्सन3 और डॉ0 सतीशचन्द4 ने नन्दिसंघ पट्टावली के आधार पर उमास्वामी को ई0 की प्रथम भाताब्दी का विद्वान माना है।

तत्वार्थ सूत्र की रचना के हेतु का वर्णन करते हुए, के कन्नड टीकाकार बालचन्द्र ने लिखा है।

सौराश्ट्र देश के मध्य उदयन्तगिरी के निकट गिरिनगर नाम के नगर मे आसन्नभव्य द्विजकुलोत्पन्न सिद्धय्य नाम का एक विद्वान भवेताम्बर भाास्त्रों का जानने वाला था, उसने 'दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः' यह सूत्र बनाकर एक पटिये पर लिख दिया था, उसी दिन के लिऐ गृद्धपिच्छाचार्य मुनि वहां आये और उन्होनें सूत्र से पहले 'सम्यक्' पद जोड़ दिया जब वह विद्वान बाहर से लोटा तो उसने पटिये पर 'सम्यक्' भाब्द लगा देखा, तो वह अपनी माता से मुनिराज के आने का समाचार मालूम करके खोजता हुआ उनके पास पहुँचा और पूछने लगा – 'आत्मा का हित क्या है?' आ. कुलता रहित सुख है। यह सुख त्रिरत्नों से ही प्राप्त होगा। इसी सूत्र भू आधार पर तवार्थसूत्र की रचना हुई है।

पूज्यपाद की 'सर्वार्थसिद्धि' 'तत्वार्थसूत्र' की टीकाओं मे आद्य व प्राचीन है और इसमे दिये प्रलेखों से प्रतीत होता है कि तत्वार्थ सूत्र की रचना भव्यजनों के हितार्थ हुई।

तत्वार्थ सूत्र जैन धर्म का प्रतिनिधि ग्रन्थ है जो आदर हिन्दू धर्म में 'गीता' को मुस्लिम धर्म में 'कुरान' को और इसाई धर्म में बाइबल को प्राप्त है वहीं तत्वार्थ सूत्र को जैन धर्म में मिला है। यहॉ यह महत्वपूर्ण है कि इसके पूर्व जैन धर्म के ग्रन्थ प्राकृत भाशा में ही लिखे गये थे, किन्तु जैसे – जैसे संस्कृत का महत्व बढ़ा, वैसे ही जैन विद्व ान भी इस माध्यम की और आकृश्ट हुए। अतः तत्वार्थ सूत्र ही जैन धर्म का संस्कृत भाशा में पहला स्पश्ट ग्रन्थ है। तत्वार्थ सूत्र में मूल तत्व को संक्षेप मे स्पश्ट किया गया है। कुल 10 अध्याय तथा 375 सूत्र है। करणानुयोग, द्रव्यानुयोग, चरणानुयोग का सार समाहित है। दिगम्बर और भवेताम्बर दोनों ही सम्प्रदायों द्वारा मान्य है।

तत्वार्थ सूत्र में आचार्य उमास्वामी ने दस अध्यायों में प्रथम चार में जीव तत्व का पां. चवे मे अजीव तत्व छठे और सातवें में आस्रवतक का आठवें में बन्धतत्व नवें मे संवर तत्व और दसवे मे मोक्ष तत्व का वर्णन किया है।

प्रथम अध्याय मे 33 सूत्र हैं जिनमें ज्ञान को प्रमाण मान कर उसके पांच भेद (1) मति ज्ञान (2) श्रुत ज्ञान (3) अवधि ज्ञान (4) मनःपर्यय ज्ञान (5) केवल ज्ञान5

द्वितीय अध्याय में 53 सूत्रों में जीव की विभिन्न स्थितियों का निरूपण किया गया है।6

तृतीय अध्याय में 39 सूत्रों में नरक, द्वीप, समुद्र, कुलाचल पर्वत, पदम आदि सरोवर, गंगा आदि नदियॉ, मनुष्यों व तिर्यचों के भेद, तथा आयु का वर्णन किया गया है।7

चतुर्थ अध्याय के 42 सूत्रों में लोकतिक, भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी चतुर्णिकाय देंवो का वर्णन किया गया है।8

पंचम अध्याय भी 42 सूत्रो मे निबद्ध है। इसमें अजीव तत्व का विवेचन करते हुए छः द्रव्यों का विवरण आया है।9

छठा अध्याय जो 27 सूत्रों मे निबद्ध है, मे कर्मो के आस्रवका विशद वर्णन किया गया है।10

सप्तम अध्याय के 39 सूत्रो मे निबद्ध है इसमे व्रत, व्रतो के भेद, व्रतो के कर्तव्य व व्रतो के अतियाचारो के साथ उपवास, हिंसा, दान, भील आदि का विवेचन है।11

अश्टम अध्याय के 26 सूत्रों मे प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेशबन्ध कर्मो का विश्लेशण है।12

नवम अध्याय जो 47 सूत्रो से निबद्ध है इस मे संवर व निर्जरा तत्व का सूक्ष्मरीत्या विवेचन किया है।13

दशम अध्याय में केवल 9 सूत्र हैं, जिसमें मोक्ष पर विस्तृत विश्लेशण है।14

गणिनी आर्यिका स्याद्वादमती माताजी ने तत्वार्थवार्तिक ग्रन्थ का अध्ययन एवं मनन करके तत्वार्थसूत्र टीका मे समावेश कर इस ग्रन्थ को भोधार्थियों के लिए उपयोगी बनाया है जिसका विवरण तत्वार्थवार्तिक के अनुसार इस प्रकार हैः–

आचार्य अकलंक देव तत्वार्थवार्तिक के प्रथम अध्याय में प्रारम्भ मे मोक्षमार्ग के स्वरूप पर प्रकाश डालते है। प्रश्नोत्तर प्रकार से प्रारम्भ किये वार्तालाप में अकलंक देव भगव.

ान महावीर व तीर्थंकरों को नमस्कार कर प्रारम्भ करते है।15

आचार्य अकलंक देव कहते है कि मोक्ष का अभिप्राय 'दुख की निवृति' है।16 जो सभी वादियो को मान्य है। परन्तु दुख की निवृति कैसे हो इसे लेकर विभिन्न लोगों में विवाद है। यहाँ विभिन्न दर्शनों का विश्लेशण है। यथा नैयायिक कहते है कि चारित्र ज्ञान से ही मोक्ष होता है।17 योग दर्शन, प्रतिपादित करता है कि ज्ञान और वैराग्य से मोक्ष होता है।18 यहाँ पदार्थों का अवबोध ज्ञान है और विशयासुखों मे अनासम्ति वैराग्य है। जबकि मीमांसक क्रिया से मोक्ष मानते हैं। बौद्धो का कथन है कि रूप वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान इन पांच स्कन्दों के निरोध से आत्मा का अभाव होता है।19 वहीं मोक्ष है। सांख्य प्रकृति और पुरूश का भेदविज्ञान होने पर स्वरूप मे लुप्त हुऐ विज्ञान के समान अनभिव्यक्त चैतन्य स्वरूप अवस्था को मोक्ष मानता है।20 वैशेशिक दर्शन आत्मा के बुद्धि सुख–दुख, इच्छा, द्वेश, प्रयत्न, धर्म, अधर्म और संस्क. ार रूप नव शेश गुणों के अत्यन्त उच्छेद को मोक्ष कहते हैं। आगे मोक्ष की व्याख्या करते हुये कहा गया है। सम्यकदर्शन सम्यकज्ञान और सम्यक चारित्र इन तीनों का सुमेल रूप रत्नत्रय मोक्ष का मार्ग है।21

दर्शनमोहनीय कर्म के उपशम, क्षय और क्षयोपशम रूप अन्तरंग कारण से होने वाले तत्वार्थश्रद्धान को सम्यकदर्शन कहते हैं।22 नय प्रमाण विकल्पपूर्वक जीवादि पदार्थो को जैसे का तैसा जानना सम्यकज्ञान है। जिस प्रकार से जीवादि पदार्थ अव. स्थित है। उनको उसी प्रकार से जानना सम्यकज्ञान है।23 संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय का निराकरण करने के लिए ही सम्यक विशेशण से संयुक्त किया गया है। यहाँ स्पश्ट कर दे कि अनेक कोटि स्पर्शी अनिर्णित ज्ञान को संशय ज्ञान कहते हैं। विपरीत निर्णय को विपर्यय ज्ञान कहते हैं। अवभास मात्र को अनध्यवसाय कहते हैं, जिसमें कुछ भी निर्णय नही होता। रत्नत्रय का तीसरा रत्न सम्यक् चारित्र है। संसार के कारण भूत राग द्वेशदि की निवृति के लिए कृतसंकल्प विवेकी पुरूश की बाह्य एवं आभ्यंतर क्रियाओं का रूक जाना ही सम्यकचारित्र है।24

दूसरे भाब्दों में जिस भाक्ति विशेश की विशुद्धि के सन्निधान से आत्मा जीवादि पदा. र्थों को जानता है। उस भाक्ति विशेश को ज्ञान कहते हैं। जिस भाक्ति विशेश की भाुद्धि के संन्निधान से आत्मा जीवादि पदार्थों को देखता है। उस भाक्ति को सम्यक दर्शन कहते हैं। और जिस भाक्ति विशेश की भाुद्धि के सन्निधान से आचरण किया जाता है वह चारित्र है। यहाँ तत्वार्थ के श्रद्वान को सम्यकदर्शन कहा है। वह तत्व क्या है ? इसका उत्तर है। तत्व सात हैं। जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष। त्रैकालिक जीवन का अनुभव करने वाला जीव है। पांच इन्द्रिया और मन, वचन, काय, आयु और भवास इन दस प्राणों से तीनों कालों में जीवन का अनुभव होने वाला जीव है।

जीव से विपरीत लक्षण वाला अजीव है। जिसमें जीव का लक्षण नही वह अजीव हैं। जिसके द्वारा कर्म आते हैं। वह आस्त्रव है। जिनसे कर्म बंधते हैं। वह बंध है। जिनसे कर्म रूके वह संवर है। जिनसे कर्म झड़े वह निर्जरा है। और जिनसे कर्मो का उच्छेद किया जाता है वह मोक्ष है। इस भाब्दार्थ के अलावा इनके लक्षण स्पश्ट करें तो जीव का स्वभाव चेतना है। चेतना ज्ञान दर्शन रूप है। जिससे जीव अन्य द्रव्यों में व्यावृत होता है। चेतना के सन्निधान से आत्मा दृश्टा, कर्ता, भोक्ता होता है। वह जीव का लक्षण है। जीव से विपरीत लक्षण वाला अजीव है। उसमें ज्ञान–दर्शन लक्षण का अभ ाव है। जीव से विपरीत स्वभाव वाला होने से ज्ञानादि का अभाव जिसका लक्षण है। वह अजीव है। यदि आस्रव के लक्षण को स्पश्ट करें तो पुण्य और पाप लक्षण रूप कर्मों के आगमन द्वार को आस्रव कहते हैं। जैसे नदियों द्वारा प्रतिदिन समुद्र जल से भरा जाता है। उसी प्रकार मिथ्या दर्शन आदि स्रोतों से आत्मा कर्मो से भरा जाता है। अतः मिथ्यादर्शनादि आस्रव है। और मिथ्यादर्शनादि कारणो के द्वारा आये हुए कर्म पुदगलों का आत्म प्रदेशों में एकक्षेत्रावगाह हो जाना बंध है और मिथ्यादर्शनादि आस्रव द्वारों को भाुभ परिणामों के वश से निरोध करना संवर है। नवीन कर्म द्वार का निरोध ही संवर है। इससे आगे कर्मो का क्षय होना निर्जरा है। पूर्व संचित कर्मो का तपो विशेश का सन्निधान होने पर एक देश क्षय होना झड़ जाना निर्जरा है तथा सर्व कर्मो का वियोग मोक्ष है। जीवादि पदार्थ सप्तभंगी रूप से जाने जाते हैं। सप्तभंगी क्या है ? एक ही वस्तु में प्रमाण से अविरूद्ध विधि प्रतिशेध अस्ति, नास्ति आदि ध र्मों की कल्पना करना सप्तभंगी है। एक ही वस्तु में प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाण के अविरूद्ध अस्ति नास्ति की विकल्पनारूप सप्तभंगी जानना चाहिए। 1. स्यात् अस्ति 2. स्यात् नास्ति 3. स्यात् अस्ति च नास्ति 4. स्यात् अवक्तव्य 5. स्यात् अस्ति च अवक्तव्य 6. स्यात् नास्ति च अवक्तव्य 7. स्यात् अस्ति च नास्ति च अवक्तव्य, इन सात रूपों का निरूपण किया गया है।

इस प्रकार तत्वार्थ वार्तिक के व्याख्यान अलंकार में प्रथम अध्याय के पंचम आहिलक तक सम्यकदर्शन का लक्षण, उत्पति, स्वामी, विशय, न्यास आदि अधिगम के उपायों का तथा तत्सम्बन्धी जीवादि की संज्ञा परिणामादि का निरूपण किया गया है।

छठे आहिलक मे सम्यकज्ञान पर विश्लेषण किया गया है। इसमे ज्ञान पांच हैं। मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय और केवल ज्ञान। मति भाब्द भाव, कर्तृ और करण साधन के भेद से तीन प्रकार का होता है। मन् धातु के भाव साधन में क्तिन प्रत्यय लगा होता है। मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम होने पर इन्द्रिय और मन की सहायता से अर्थो का मनन मति है।

श्रुत भाब्द कर्म साधन भी होता है। श्रुत ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम आदि–बहिरंग कारणों के सन्निधान होने पर जो सुना जाय वह श्रुत है।

अवधि ज्ञानावरण के क्षयोपशमादि अन्तरंग बहिरंग साधनों के सन्निधान होने पर नीचे के और विशेश जानता है वह अवधि हैं। अवधि भाब्द मर्यादावाची है। इसलिए द्रव्य, क्षेत्र, काल की मर्यादा से सीमित ज्ञान अवधि ज्ञान है। मन के प्रती मन का प्रतिसंध ाान करके जो ज्ञान होता है, वह मनः पर्यय ज्ञान है। मनः पर्यय ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम आदि अन्तरंग–बहिरंग कारणों के सन्निधान होने पर जो दूसरों के मनोंगत अर्थ को जानता है। वह मनः पर्यय ज्ञान है। बाह्ययरभ्यंतर क्रिया विशेश से जो पदार्थो को जानता है वह केवल ज्ञान है। जिसके लिए मन–वचन–काय के आश्रय से बाह्य और अभ्यंतर विविध प्रकार के तप तपे जाते है, वह केवल ज्ञान है।

भोश प्रथम अध्याय में मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय व केवल ज्ञान के विभिन्न पक्षों का विविध दृश्टियों से विश्लेशण किया गया है। ज्ञान–दर्शन, तत्व, नयो के लक्षण और ज्ञान की प्रमाणिकता का निरूपण है।

द्वितीय अध्याय में जीव के औपशमिक, क्षणिक, क्षायोपशमिक औदारिक और पारिण ाामिक भावों पर विश्लेशण किया गया है तथा पांच इन्द्रियों में स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र है इसमे स्पर्श, रस, गंध, वर्ण और भाब्द को इन्द्रियों का विशय है।

तृतीय अध्याय में तीन लोक26 अधोलोक, तिर्यग्लोक (मध्यलोक) तथा ऊर्ध्वलोक का वर्णन है। विविध सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यकचरित्र रूप मोक्ष मार्ग के आदि में उपदिश्ट सम्यगदर्शन के विशय में कथित जीवादि पदार्थों के उपदेश में जीव का निर्देश किया है। उसी जीव के निवास के व्याख्यान के प्रसंग में लोक का वर्णन किया गया है।

इसी क्रम में सात नरक भूमियों का नाम निर्देश व उनका आधार तथा नरकों का निश्चित स्थान व उनके भेद व प्रत्येक भूमि के नाम दिए हैं। नारकियों द्वारा एक–द. ूसरे को दिए जाने वाले दुःखों का वर्णन द्वीप व समुद्रों के नाम तथा जम्बू द्वीप का वर्णन, सात क्षेत्रों का नाम निर्देश तथा प्रथम क्षेत्र का नाम भरत क्यों पड़ा ? आदि वर्णन किया गया है – हिमवान आदि पर्वतों के नाम, पर्वतों के ऊपर सरोवरों का वर्णन, गंगा, सिन्धु आदि नदियों के भी परिवार नदियों का वर्णन मनुश्यों के दो भेद आर्य व मलेच्छ तथा उनके लक्षण आदि विशयों पर विचार विश्लेशण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में देव भाब्द का अर्थ27 तथा देवों के भेद आदि का विस्तार पूर्वक विश्लेशण किया गया है।

पंचम अध्याय में अजीव आस्तिकायों का निर्देश दिया है तथा धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल पर विस्तार से वर्णन किया गया है।28

छठे अध्याय में योग के लक्षण29 तथा योग ही आस्रव है, का विश्लेशण, आस्रव के भेद तथा विश्लेशण का विचार है।

सातवें अध्याय में व्रतों का निर्देश30, व्रत के निर्धारण के लिए हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह से विरक्त होना व्रत है, का वर्णन है। अणुव्रत और महाव्रतो का वर्णन हिंसा को परिभाशित करते हुए 'प्रमाद के वशीभूत होकर प्राणों का व्यपरोपण करना हिंसा है।' इसी प्रकार 'बिना दिए हुए दूसरों के पदार्थों का ग्रहण करना स्तेय है।' अब्रह्म के संदर्भ में 'मैथुन कर्म को अब्रह्म कहते हैं।' मूर्च्छा को परिग्रह कहा गया है।

आठवें अध्याय में बन्ध का विश्लेशण है।31 मिथ्यादर्शन अविरति, प्रमाद, कशाय और योग को बन्ध का कारण कहा है। बन्ध के चार भेद हैं। प्रकृति, स्थिति, अनुभव और प्रदेश।

नवें अध्याय में संवर का वर्णन है।32 आस्रव निरोध को संवर कहते है। कर्मों के आगमन के निमित्तों का अप्रादुर्भाव ही आस्रव निरोध है। कर्म आगमन के निमित्तभूत मन वचन और काय के प्रयोग का, स्वात्मालाभ हेतु के सन्निधान से उत्पन्न नही होना आस्रव निरोध है। आस्रव का निरोध होने पर आस्रव पूर्वक कर्मो के आदान का अभाव ही संवर है। कारण के अभाव मे कार्य का अभाव होता है। अतः आस्रव का निरोध होने पर तत्पूर्वक अनेक सुखःदुखों के बीजभूत कर्मो का ग्रहण नहीं होना संवर है।

दशम अध्याय में मोक्ष का विवरण है।33 बंध के कारणों का अभाव संवर और निर्जरा के द्वारा सम्पूर्ण कर्मो के नाश हो जाने को मोक्ष कहा है। मोक्ष में औपशमिकादि भव्यत्वादि भावों का भी अभाव हो जाता है। किन्तु केवल सम्यकत्व केवल ज्ञान, केवलदर्शन और सिद्धत्व इन चार भावों का नाश नहीं होता।

इस प्रकार गणिनी आर्यिका स्वाद्‌‌ादमती माता जी द्वारा मोक्षशास्त्र (तत्वार्थसूत्र) वि. मलप्रश्नोत्तरी टीका में आचार्य पूज्यपाद सर्वार्थ सिद्धि आचार्य अकलंकदेवः तत्वार्थरा. जवार्तिक व अष्टशती आचार्य विद्यानन्दि तवार्थश्लोकवार्तिकालंकार, इत्यादि प्रन्थों का उपयोग कर तत्वार्थसूत्र के 357 सूत्रो का विवेचन आचार्यो के वचनो के आधार पर है जो विश्वविद्यालयो के भाोध छात्रो के लिये व सभी के लिये उपयोगी है।